मच्छरों का दुश्मन चमगादड़

नरेन्द्र देवांगन

मच्छरों के काटने से होने वाले बुखार का दौर देश भर में चलता ही रहता है। जैसे सामान्य मलेरिया, मेनेन्जाइटिस, घातक मलेरिया से ले कर चिकनगुनिया, डेंगू, जापानी एंसेफेलाइटिस और वायरल एंसेफ्लाइटिस तक। मच्छरों द्वारा फैलने वाली इन बीमारियों से प्रति वर्ष कितनी ही जानें चली जाती हैं। हर साल देश भर में कहीं न कहीं मच्छरों से फैलने वाली बीमारियों का कहर बरपता ही है। तब सरकारी और गैर सरकारी संस्थाएं आम लोगों को यह बताने की ज़हमत उठाती हैं कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। इससे बचाव के क्या उपाय हैं, घरेलू चिकित्सा क्या है? इसके अलावा स्थानीय प्रशासन द्वारा कुछ दवाओं का वितरण कर दिया जाता है। कचरे की सफाई, जमा हुए पानी में एकाध बार कीटनाशक का छिड़काव कर छुट्टी पा ली जाती है।

अब वह समय आ गया है कि हम इन उपायों से अलग और भी कुछ सोचें, क्योंकि अब कीटनाशक का भी फायदा नहीं रहा। बाज़ार में जितनी तरह के कीटनाशक उपलब्ध हैं, उनका हमारी सेहत पर प्रतिकूल असर पड़ता है। मच्छर बाज़ार में मिलने वाले क्वाइल और मॉस्किटो रेपलेंट के आदी हो गए हैं। रही बात मच्छरदानी के इस्तेमाल की तो इससे हम रात के वक्त तो बच सकते हैं लेकिन दिन के वक्त नहीं। इसलिए अब हमें कुछ ऐसा करना होगा कि मच्छरों का ही खात्मा हो जाए।

कीटनाशक और साफ-सफाई के अलावा मच्छरों के समूल नाश का कोई उपाय है क्या? ज़रूर है, इन मच्छरों से हमें निजात दिलाएंगे चमगादड़, क्योंकि मच्छरों के लिए ये चमगादड़ काल समान हैं। लेकिन हमारे पर्यावरण के लिए यह बड़ी चिंता का विषय है कि चमगादड़ों की तादाद दुनिया भर में घटती जा रही है। कुछ पर्यावरणविदों का मानना है कि समय रहते ठोस कदम उठा कर चमगादड़ों को बचाने के काम में जुट जाना चाहिए।

पर्यावरण संतुलन में इन चमगादड़ों की बड़ी भूमिका है, इसमें कोई शक नहीं। साथ ही यह भी सच है कि मच्छरों से होने वाली बीमारियां लौट कर वापस आ गई हैं तो इसके पीछे चमगादड़ों की घटती तादाद एक बड़ा कारण है। सिर्फ मच्छर ही नहीं, खेत-खलिहानों को नुकसान पहंचाने वाले छोटे-मोटे कीड़े-मकोड़ों को भी चट कर ये चमगादड़ बड़ा उपकार करते हैं।

इसीलिए विश्वविख्यात पर्यावरणविद पीटर रूमल ने 2009 में चमगादड़ों को बचाने की मुहिम में जुट जाने की सिफारिश की थी। उनका कहना था कि एक अदद चमगादड़ एक रात में कम से कम 2500 मच्छरों को खाता है। इसके अलावा हवा में घूमने वाले छोटे-मोटे कीड़े-मकोड़ों को भी खाकर चमगादड़ पर्यावरण की रक्षा करता है। अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में हो रहे एक शोध से पता चला है कि चमगादड़ों की एक बस्ती रात भर में 150 टन से भी ज़्यादा मच्छर और कीट-पतंगों का सफाया कर देती है।

शोधकर्मियों ने बड़ी-बड़ी गुफाओं में चमगादड़ों की बस्तियों का पता लगाया है। उन गुफाओं में प्राकृतिक जीवन चक्र चलता रहता है। ये गुफाएं पर्यावरण संतुलन की एक अच्छी मिसाल बनी हुई हैं। लेकिन विडंबना यह है कि आजकल चमगादड़ नज़र ही नहीं आते हैं। वजह यही है कि हमारे समाज ने चमगादड़ों को अशुभ करार दे दिया है और अंधविश्वास के चलते बड़ी संख्या में चमगादड़ों का संहार कर दिया गया है। अब भी यह क्रम जारी है। इसके अलावा कुछ जगहों पर चमगादड़ का मांस खाने का भी चलन है। मान्यता यह है कि चमगादड़ का मांस यौन शक्ति बढ़ाने में काफी मददगार है।

जहां तक चमगादड़ के स्वभाव का सवाल है तो यह

एकमात्र उड़ने वाला स्तनपायी बड़ा ही निरीह है। आदमी की परछाई से भी दूर रहता है, पर इंसान है कि इनका दुश्मन बन गया है। कुछ अंधविश्वास के चलते तो कुछ अनजाने डर की वजह से। और इन दोनों ही वजहों के पीछे कुछ मिथक काम करते हैं जबकि इन मिथकों में सच्चाई बिलकुल नहीं होती। इन्हीं अंधविश्वासों के चलते हॉलीवुड में वैंपायर को लेकर कई फिल्में बनीं और चमगादड़ों का नाम ही वैंपायर पड़ गया।

दुनिया भर में चमगादड़ों की 1100 प्रजातियां हैं जिनमें से महज तीन प्रजातियां वैंपायर यानी खून चूसने वाली हैं। ये भी इंसान का खून नहीं बल्कि समुद्री मुर्गी, बत्तख, सुअर, कुत्ते, घोड़ों और बिल्लियों का खून पीते हैं। बाकी सारी प्रजातियों के चमगादड़ कीड़े-मकोड़े, फल, मेंढक, मछली और फूलों का पराग भोजन के रूप में ग्रहण करते हैं। कीड़े-मकोड़े खाने वाले चमगादड़ रात को हमारी फसलों की रक्षा करते हैं वहीं जंगल के संरक्षण में भी इनकी बड़ी भूमिका होती है। फल खाने वाले चमगादड़ों की वजह से फलों के बीज जंगलों में नए पेड़-पौधे उगाते हैं। बताया जाता है कि 95 फीसदी वर्षा वन का संरक्षण इन्हीं चमगादड़ों की वजह से होता है।

चमगादड़ को लेकर दूसरा मिथक यह भी है कि इन्हें दिखता कम है जबकि सच्चाई यह है कि ज़्यादातर चमगादड़ अंधे नहीं होते। कुछ चमगादड़ तो कम से कम रोशनी में भी देख पाते हैं। तीसरा मिथक चमगादड़ के बालों में उलझने का है। महिलाएं इससे बहुत ज़्यादा आतंकित होती हैं। अगर चमगादड़ कभी किसी इंसान की ओर बढ़ते हैं तो इंसान पर हमला करना उनकी मंशा नहीं बल्कि उसके आसपास उड़ रहे मच्छर खाना उनका लक्ष्य होता है। कारण, चमगादड़ों में प्रतिध्वनि के आधार पर काम करने वाला सिस्टम होता है, जो कि सोनार सिस्टम कहलाता है। इस सिस्टम की वजह से चमगादड़ अपनी आवाज़ के मच्छरों तथा अन्य कीड़े-मकोड़ों से टकराकर आने वाली प्रतिध्वनि की मदद से आहार ढूंढते हैं।

यह अलग बात है कि घायल चमगादड़ अपनी आत्मरक्षा के लिए किसी पर भी हमला कर सकते हैं। इसीलिए इंसानों पर चमगादड़ के हमलों की कुछ घटनाएं सामने आई हैं। विशेषज्ञों की राय में चमगादड़ अगर हमला करते भी हैं तो आत्मरक्षा में ही करते हैं।

चमगादड़ों को लेकर ऐसी बहुत सारी भ्रांतियां हैं। इन्हीं में एक यह भी है कि चमगादड़ का मांस यौन क्षमता को बढ़ाने वाला है। यह भ्रांति चमगादड़ों के लिए खतरा बन गई है। जाल के ज़रिए एक-एक आदमी एक दिन में 100-100 चमगादड़ों का शिकार करता है। सिर्फ पूर्वोत्तर भारत में ही नहीं, थाईलैंड, बाली, इंडोनेशिया में बड़े पैमाने पर स्वाद और यौन क्षमता बढ़ाने के लिए चमगादड़ खाए जाते हैं जबकि चमगादड़ के मांस में यौन क्षमता बढ़ाने जैसा कोई वैज्ञानिक तत्त्व अब तक नहीं पाया गया है।

चमगादड़ों के संरक्षण के लिए हम कुछ कदम आगे बढ़े हैं। बंगाल के दूरदराज़ गांवों में अब इसकी ज़रूरत समझ में आ गई है और बंगाल के बहुत से ज़िलों में चमगादड़ों को बचाने के लिए गांव वालों में जागरूकता भी देखी जा रही है। बड़ी बात यह है कि इस काम में गांव की महिलाएं सबसे आगे हैं। नदिया ज़िले की चुन्नीबाला भी ऐसी ही एक महिला हैं, जिन्होंने पर्यावरण के लिए चमगादड़ों की ज़रूरत को अच्छी तरह जान लिया है और अपने गांव में इसके लिए मुहिम शुरू कर दी है। कबूतरखाने की तरह चमगादड़ के लिए घर बना कर वे इनके संरक्षण के काम में जुटी हुई हैं। वे बताती हैं कि शुरुआत में लोग उनकी बातों पर खास ध्यान नहीं देते थे लेकिन अब ऐसा नहीं करते। चुन्नीबाला कहती हैं, हमारे गांव के लोग चमगादड़ का मांस बड़े चाव से खाते थे। शाम होते ही कुछ लोग चमगादड़ पकड़ने निकल जाते थे। इस तरह हर रोज़ बड़ी संख्या में चमगादड़ मारे जाते थे। यह चिंता का विषय है कि चमगादड़ के शिकार पर किसी तरह की रोक नहीं है न ही कोई कानून अब तक बना है। इसी कारण इनकी तादाद तेज़ी से घटती जा रही है, लेकिन अभी तक इन्हें दुर्लभ प्राणियों की श्रेणी में नहीं रखा गया है।

वन्य प्राणी विशेषज्ञों का मानना है कि चमगादड़ों की प्रजनन क्षमता बहुत ही धीमी है। मादा चमगादड़ साल में एक, कभी-कभी दो चमगादड़ ही पैदा करती है और प्रकृति

द्वारा इन्हें 25-40 साल की उम्र प्रदान की गई है। इस तरह एक चमगादड़ के मारे जाने का अर्थ भविष्य में सैकड़ों चमगादड़ों के मारे जाने के बराबर है।

अमरीका के एक वैज्ञानिक डॉ. कांबले ने अपने 14 साल के प्रयोग के आधार पर बताया है कि चमगादड़ मलेरिया फैलाने वाले मच्छरों के दुश्मन हैं। इसीलिए दुनिया भर से मलेरिया के समूल नाश के लिए चमगादड़ पालन पर ज़ोर दिया जाना चाहिए। उनका मानना है कि चमगादड़ की एक प्रजाति का एक अकेला चमगादड़ तीन हज़ार से भी ज़्यादा मच्छर एक घंटे में चट कर जाता है। डॉ. कांबले कहते हैं कि चमगादड़ उड़ने वाले कीड़े-मकोड़ों की आबादी पर रोक लगाने का काम बखूबी करता है। जहां मच्छरों की तादाद बहुत अधिक है वहां भूरे रंग की प्रजाति का चमगादड़ एक घंटे में कम से कम 600 और ज़्यादा से ज़्यादा 1200 से भी अधिक मच्छरों को खा जाता है। भूरे रंग का चमगादड़ तीन हज़ार से ज़्यादा मच्छर एक घंटे में खा जाता है। इसी कारण वैज्ञानिकों की सिफारिश को तरजीह देते हुए अमरीका के हर शहर में बैट हाउस तैयार कर चमगादड़ पालन का काम शुरू हो गया है।

बताया जाता है कि टेक्सास में चमगादड़ों की बाकायदा एक कॉलोनी है। यही नहीं, मच्छरों के हमले से बेहाल ब्रिटेन में बैट कंज़र्वेशन ट्रस्ट (बीसीटी) की स्थापना 1990 में की गई। यह गैर सरकारी संस्था पश्चिमी दुनिया में चमगादड़ को बचाने को लेकर आम लोगों में जागरूकता फैला रही है।

जहां तक भारत का सवाल है, यहां कुछ ठोस नहीं हो रहा है। अंडमान- निकोबार में चमगादड़ों पर काफी शोधकार्य ज़रूर चल रहा है लेकिन इससे ज़्यादा कुछ नहीं। भारत की मुख्य भूमि अब तक अधिकांशतः अज्ञान के अंधकार में जी रही है। ***(स्रोत फीचर्स)***